

LOOK N LEARN

CHILDREN'S JAIN

MAGAZINE

25th February 2018 Every Fortnight | English, Hindi & Gujarati

Story
time



kapil kEvali



“लोभ से भवों की वृद्धि, त्याग से मिलती है सिद्धी”



कपिल केवली

पिता राजपुरोहित महापंडित
व कपिल का जन्मोत्सव
The royal priest and
birth celebration of Kapil

कोशाम्बी नगरी के राजा प्रसेन्नजित अपने राजपुरोहित काश्यप का बहुत सन्मान करते और अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में उनकी सलाह लेते थे।

राजपुरोहित काश्यप को जब पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई तो राजानें उन्हें घर से राजमहल आने-जाने के लिए राजकिय रत्नाशिविका देकर पुत्र कपिल के जन्मोत्सव पर सन्मानित किया।

King Prasanjit of Kosambi Nagari respected and honoured his royal priest Kashyap. He used to consult him before making crucial decisions. When the royal priest was blessed with a baby boy named Kapil, King honoured him by gifting a "Royal Rajatshivika" (a vehicle used to travel from home to palace)

“परिवर्तन जगत का नियम है,
आज सन्मान कल अपमान, यही है संसार का निवेदन”

जब बालक कपिल लगभग ८ वर्ष के थे तो अचानक बिमारी की वजह से कपिलकेपिता राजपुरोहितजी का देहान्त हो गया। कपिल की बाल्यावस्था को देखकर राजाने राजपुरोहित का पद सौमिलदत्त नामक एक विद्वान ब्राह्मण को सौंप दिया।



बालक कपिल और उनकी माता का राज सन्मान छीन गया और माता बहोत दुःखी हो गयी। धीरे धीरे माता की स्थिती भी सामान्य हो गयी।

When Kapil was 8 years old his father, the royal priest died due to sudden illness. Since Kapil was very young, the post of royal priest was given to an intellectual brahmin named Saumildutt.

Kapil and his mother's royal honours were taken away which made his mother very sad. Eventually, his mother accepted the reality.

बालक कपिल का कुतुहल...



एक दिन जब कपिलके घर के सामने से वर्तमान राजपुरोहित की राज सवारी बड़े ठाठ-बाट से वाद्य-यंत्र बजाते जा रही थी तब बालक कपिल प्रसन्न होकर तालियाँ बजाने लगे और कुतुहल पूर्वक अपनी माता को सवारी देखने के लिए बुलाने लगे। सवारी देखते ही

माता की आँखों से दर्द भरे आंसू बहने लगे। आग्रहपूर्वक रोने की वजह पुछने से माता ने उन्हें उनके पिता राजपुरोहित काश्यप और उनके ठाठ - बाट के बारे में बताया।

One day, when the royal priest's procession was passing by Kapil's house with all the royal pomp, Kapil started clapping with excitement .. and due to curiosity, he called his mother to watch the procession. On seeing the procession, her eyes were filled with tears of sadness. When Kapil insisted her to tell him the reason of her agony, she told him about the post of his father as a royal priest in past and all his royal magnificence.

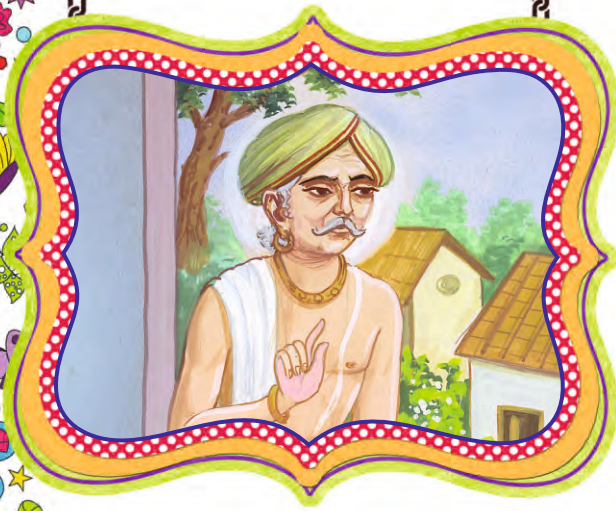
विचारों का मंथन और ज्ञानार्जन का संकल्प...

अपने पिता के बारे में सुनकर, उन्होंने अपनी माता से स्वयं राजपुरोहित बनने के लिए उत्सुकता दिखाई और जब माता ने, पढ़ लिखकर विद्वान बने बगैर यह पद नहीं मिलता यह बात बतायी तो वह गहरी सोच में डूब गए। उनके मनमें विचारों का मंथन चल रहा था, वे कुछ समय तक सोचते रहे और अंत में उन्होंने संकल्पपूर्वक अपनी माता को विद्याध्ययन करने का आश्वासन दिया और अपने खोए हुए राजसी सन्मान को प्राप्त करने का वचन दिया।



Hearing this, Kapil expressed his excitement to become the royal priest one day. When his mother explained him that the eligibility of being royal priest is studying hard and becoming scholar, Kapil went in deep thoughts and after a lot of thinking, he pledged his mother about studying hard and promised her that he will bring their royal prestige back.

“बुजुर्ग बड़े लोग जो कहते हैं वो अनुभव से कहते हैं उनकी बात मानने से हमारा अच्छा ही होता है।”



पुत्र के संकल्प को सुनकर माता का मन परम आनंद से भर गया।

माता ने उन्हें श्रावस्ती नगरी में उनके पिता के परम प्रिय मित्र, इन्द्रदत्त उपाध्यायजी के पास जाकर ज्ञान उपार्जन करने के लिए आदेश दिया और आशिर्वाद दिया और

उनके शुभ आशिर्वाद से कपिल का आत्मविश्वास बढ गया हितोपदेश सिख में माताने उन्हें, अपने स्वास्थ्य का ध्यान और गुरु का विनय करके अयोग्य कार्यों से दूर रहने का उपदेश दिया।

Seeing the strong determination of her son, Kapil's mother became extremely happy and blessed him, which further increased his confidence.

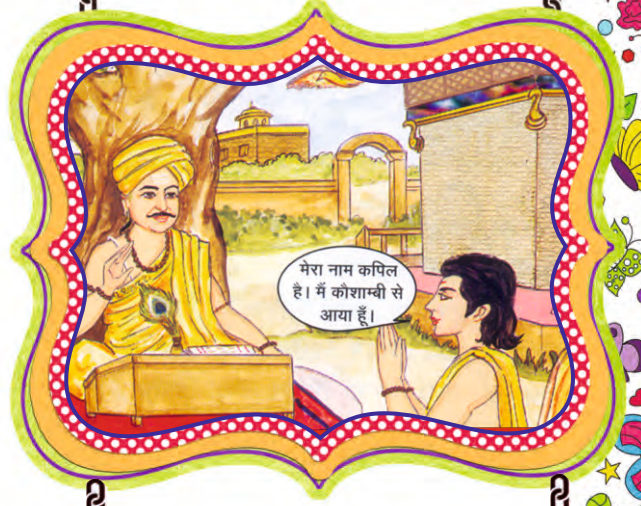
Kapil's mother advised him to go to imbibe knowledge from his father's friend, Pandit Indradutt. In with a blessing to go forward to study she advised him before leaving to take care of his health and pay due respect to the teacher and to keep himself away from doing anything wrong.

श्रावस्ती में विद्याध्ययन...

“जिज्ञासा ज्ञान की जननी है”

कपिलने श्रावस्ती नगरी में अपने पिता के मित्र पंडित इन्द्रदत्त उपाध्यायजी के गुरुकुल में पहुँच कर उन्हें अपना यथोचित परिचय देकर आने का प्रयोजन बताया। पंडित इन्द्रदत्तजीने इस तेजस्वी, बुद्धिमान एवं जिज्ञासु मित्र के पुत्र को अपना शिष्य बनाया। कपिलने अपनी ज्ञान की लगनशिलता और श्रमसाधकता के गुणों के कारण अत्यंत अल्प समय में ही अतिशीघ्र ज्ञान की अनेक सीढ़िया चढ़ ली।

Kapil went to Shravasti nagari to meet his father's learned friend. Kapil introduced himself and explained his intention of studies. Pandit Indradutt accepted this bright, intelligent and promising child of his friend as his Disciple. Soon, Kapil excelled the ladder of knowledge with his devotion and deligence.



“ज्ञान की अनुमोदना करने से, ज्ञान में सहायक बनने से...

भविष्य में ज्ञान सरलता से प्राप्त कर सकते है”



दैनंदिन जीवन में भिक्षान्न माँगकर लाना भोजन बनाना, बर्तन साफ करना आदि कार्य की अति - व्यस्तता के कारण, जब गूढ़ ज्ञान सीखने का समय आया तो कपिल धीरे - धीरे पिछे रहने लगे। पंडित जी ने उनकी अतिव्यस्तता को दूर करने के लिए नगर श्रेष्ठी शालिभद्र को कपिल जी का भरण पोषण करने की विनंती की।



Due to his extremely busy schedule like bringing food material, cooking food, cleaning utensils etc... Kapil started lacking behind in studying the core part of knowledge. To help him study hard and to release him from his daily work pressure,

Pandit Indradutt requested Seth Shalibhadra to sponsor Kapil's studies. Seth Shalibhadra accepted his request immediately and Kapil was relieved from his duties.

कपिल-कपिला...

शालिभद्र शेट ने अपने अतिथी गृह में कपिल के आवास और भोजन की व्यवस्था करके अपनी दासी पुत्री कपिला को उनकी सेवा करने का आदेश दिया। हसमुख और मिलनसार कपिला, कपिल के सारे काम प्रेमपूर्वक और समयसर करती थी। धीरे - धीरे उनके बिच मित्रता बढ़ती गई। जब पंडित इन्द्रदत्तजी को इस बात का पता चला तो उन्होंने कपिलजी को गुरुकुल से निकाल दिया और उनकी सारी व्यवस्थाएँ बंद कर दि।



Seth Shalibhadra made arrangement for Kapil's food and made him stay in his guest house. He also appointed Kapila, the daughter of his maid, to serve and to look after Kapil. Kapila was kind and jolly girl. She did all the work for Kapil carefully and on time. Gradually their friendship started increasing. When Pandit Indradutt came to know about Kapil and Kapila, he became very disappointed. He expelled Kapil from Gurukul and stopped all his living arrangements.

दो तोला सोना...



भूख की और पेट भरने की उग्र समस्या के कारण कपील का मन चिंता से गिर गया। तभी कपिलाने एक सुझाव दिया।

श्रावस्ती के राजा उनके नित्य नियमानुसार, जो भी उन्हें प्रातःकाल में सर्व प्रथम शुभाशीर्वाद

रूप प्रशस्ति सुनाते थे, उन्हें राजा २ तोला स्वर्ण प्रदान करते थे।

Thoughts of earning his living, surrounded Kapil's mind. Kapila suggested him to go to the king.

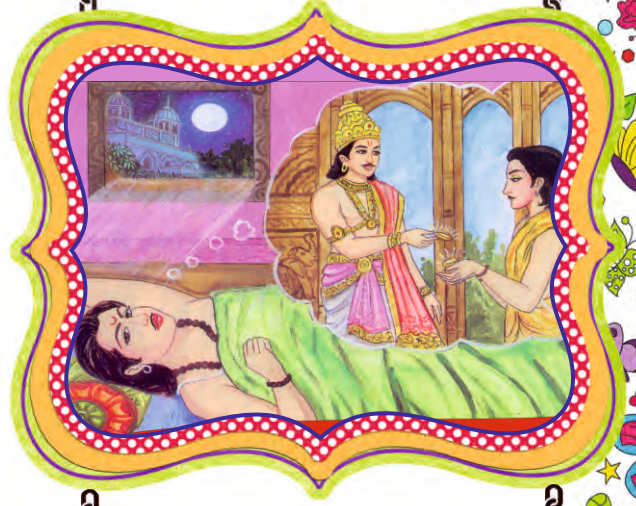
King of Shravasti had a rule to give 20 grams of gold every morning to the one who would bless him first with a "Prashasti' shloka".

“शरीर का अंत हो जाता है,
परंतु तृष्णाओं का कभी अंत नहीं होता”

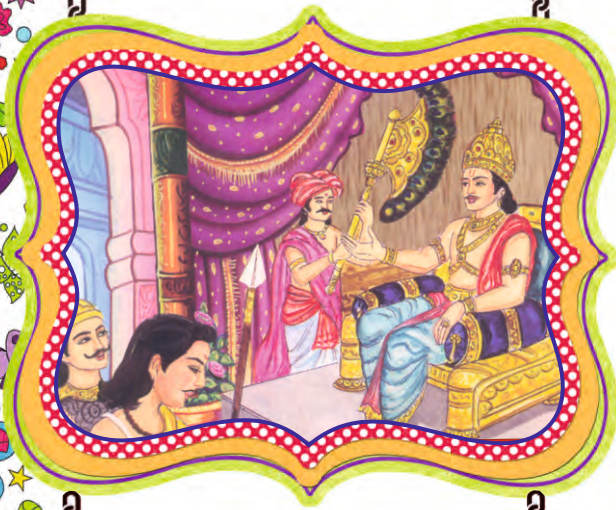
“तृष्णा उपकारी के उपकार को भी भूला देती है”

कपिला के सुजाव से सहमत होकर कपिलने प्रातःकाल सर्व प्रथम राजा के पास जाने का निर्णय लिया। राजासे मिलने में कहीं देर न हो जाए इस भय से चिंतित कपिल मध्यरात्री के २ बजे राजपथ पर दौड़ने लगे आरै चोरी की शंका से राज सिपाहीयोंने उन्हें पकड लिया।

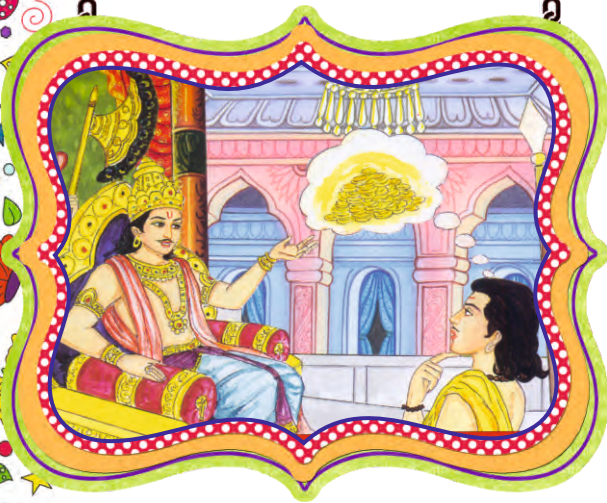
Kapil agreed and decided to go to the King, the next morning. But, his mind was wandering around 20 grams of gold. Due to the fear of being late to reach the palace, he started running on the road at midnight 02.00 pm and as a result king's soldiers suspected him of being a thief and arrested him.



“बीता हुआ कल आज की स्मृति है,
और आने वाला कल आज का स्वप्न है”



जब दूसरे दिन उन्हें राजसभा में उपस्थित किया गया, तो कपिल ने राजा को बचपन से लेकर वर्तमान स्थिति तक सत्य सत्य घटना सुनाई और अपनी माता और गुरु के प्रति अपराध स्वीकार कर राजदंड की स्वेच्छासे याचना की।



The second day when he was presented before the King, Kapil narrated his entire story to the King. Kapil accepted his crime towards his mother and Guru and expressed his willingness to accept all kind of punishment.

“ग्रहण करने में भय है,
छोड़ने में शांति है”

“विकल्प मिलेंगे बहुत मार्ग भटकाने के लिए,
संकल्प एक ही काफी है मंजिल तक जाने के लिए”

कपिल के कथन के ढंग से ही राजा को कपिल की निर्दोषता दिखाई दी और वे पिघल गये और उन्होंने कपिल को जो चाहिए वो माँगने को कहा।

दंड देने के स्थान पर राजा से पुरस्कार माँगने के फर्मान पर कपिल आश्चर्यचकित हो गये। राजा से

क्या माँगु?... कितना माँगु? यह विचार में कपिल मग्न हो गये। कपिल के मन की लोभवृत्तिते उन्हें २ सोनामहोर से लेकर राजा के संपूर्ण राज्य माँगने तक की तृष्णा का सफर करवाया।



King understood the innocence of Kapil by the way he had narrated his story. The king felt compassion towards Kapil and offered him to ask for whatever he wants from the king. Kapil was surprised to get an award, instead of getting punishment from the king. Kapil started introspecting as to what and how much to ask from the King. Kapil was drowning in greed. In this journey of greed he travelled through asking 20 gms gold coins to entire kingdom from the king.

कपिल का चिंतन...



इसी तृष्णा का मनोमंथन करते करते कपिल तृष्णारूपी नदी में डुब रहे थे। तभी अचानक उन्होंने सोचा यदि समुचे संसार का धन-वैभव भी मिल गया तो भी मेरा मन नहीं भरेगा। यही सोचते सोचते उन्हें जातिस्मरण ज्ञान हुआ और वे अपना पिछला भव देखने लगे, जब उन्होंने संयम लिया था उनकी उत्कृष्ट साधना के फल स्वरूप उनके मन ने तृष्णा छोड़कर संतोष धारण कर लिया।

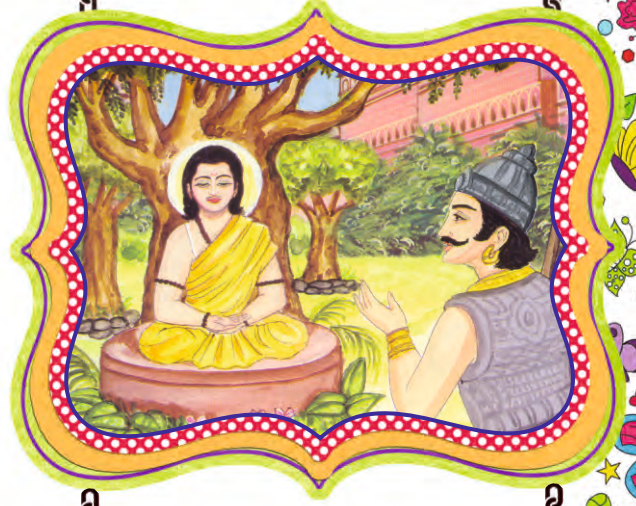


In this greediness, all of a sudden he realised that even if he gets the entire wealth of this world, He will still not be satisfied, while thinking upon this, he got Jati- Smaran Gnan and he saw his past life

where he was a monk/Saadhu in his past life and as a fruit of his Sadhana, finally his mind was released from greed and he became contented.

कपिल शांत चित्त होकर उद्यान में पेड़ के नीचे ध्यान मग्न हो गए। जब काफी देर तक कपिल राज दरबार में नहीं पहुँचे तो राजा ने कोतवाल को बुलाने के लिए कहा। कोतवाल के बार बार पुकारने पर भी जब कपिल ने उत्तर नहीं दिया, तब राजा स्वयं उनके पास आए। राजा को देखकर उन्होंने अपने संतोष और संयमरूपी परम धन प्राप्ति की बात कही।

Kapil sat down in meditation under a tree in the royal garden. When Kapil didn't return for long time, the King sent his merchant to get Kapil in royal court. When Kapil didn't answer to king's merchant, King decided to go and meet him personally. Kapil explained the king, he has realised now that satisfaction and saiyam are the greatest wealth in the world.



संयम एवं केवलज्ञान...
“त्याग बीना सुख नही”



राजा से आज्ञा लेकर उन्होंने संयम अंगीकार किया और ६ महिने की कठोर साधना से कपिल मुनि सर्वज्ञ - सर्वदर्शी केवली बन गए... केवली भगवंत बन गए।

With the permission of the King, Kapil renounced the world and took Diksha. He performed great Sadhana for 6 months and attained Omniscience.



५०० चोरों का प्रतिबोध

एक बार कपिल केवली जब श्रावस्ती नगरी से विहार करके जा रहे थे तब चोरों की एक टोली ने उन्हें लूटने के आशय से घेर लिया।

Once when Kapil Kevali was travelling from Shravasti nagari, a gang of thieves surrounded him.

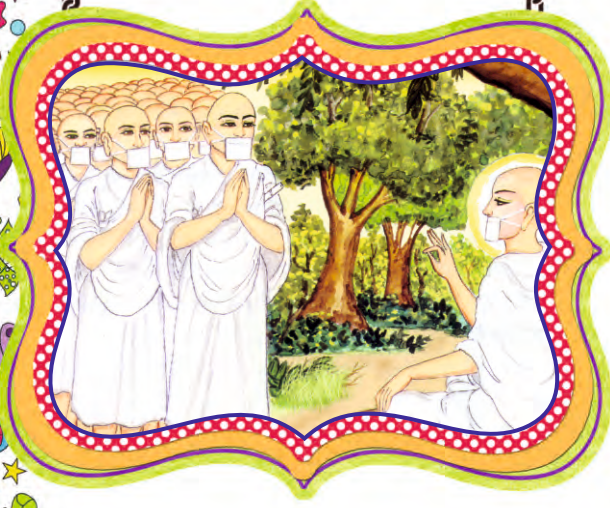
“लोभ से अशांति, त्याग से शांति”

जब चोरों के सरदार ने उनसे धन माँगा तो कपिल केवली ने उन्हें नाशवंत संसार और दुष्कर्म को दुर्गतियों में जाने का कारण समझाया। क्षणिक वैभव रूपी धन पाने के लिए दूसरों का धन लूटना और उन्हें कष्ट पहुँचाना यह सब कर्म रूपी मैल आत्मापर चढ़कर उसे दुर्गति में ले जाते हैं।



When the chief of the thieves asked Kapil Kevali to give away all his wealth, he indoctrinated them about the supreme wealth of the soul. He further explained them about the temporary world and the transmigration of the soul due to one's bad Karma. Just to get the temporary worldly pleasure, to rob other people and to give them pain is the reason to take them to Durgati.

चोरों का हृदय परिवर्तन...



कपिल केवली के मार्मिक उपदेश सुनकर सभी चोरों को वैराग्य उत्पन्न हुआ और उन्होंने कपिल केवली के शिष्य बनकर संयम अंगीकार किया।

Listening to the sermons of Kapil Kevali, all the thieves renounced the world and became his Disciples.

LOOK N LEARN MAGAZINE

Please contact us for your Valuable Feedbacks,
Gifting a Magazine, Complains, Suggestions,
or any Change of Address on...

Address :- Look n Learn Magazine
Parasdharm,
Vallabh baug Lane,
Tilak Road,
Ghatkopar (E),
Mumbai-77

Cont No :- 022-21027676

Email ID :- jainmagazine108@gmail.com



Alert Bell

March 2018

Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	



1st - Chaumasi pakhi

23rd - Aayambil Oli begins

29th - Shree Mahavir Swami Jayanti

31st - Aayambil Oli Ends

The auspicious days
○ - Aatham ○ - Pakhi
Let's follow Tithi

परमात्मा कहते हैं...



कसिणं वि जो इमं लोयं,
पडिपुण्णं दलेज्ज एगस्स।
तेणावि से ण संतुस्से,
इइ दुप्पूरए इमे आया।।

धन-धान्यादि से भरा हुआ परिपूर्ण यह लोक यदि कोई सुरेन्द्रादि एक ही व्यक्ति को दे दे तो, उससे भी वह आत्मा संतुष्ट नहीं होता है इस प्रकार इस आत्मा का तृप्त होना अति ही कठिन है।

Number all the images in the story sequence and write a slogan for each.

